पवित्रता, सुख, शान्ति का जनक है अध्यात्म - पाटिल

ज्ञानसरोवर। राष्ट्रीय स्वाभिमान आंदोलन के राष्ट्रीय मंत्री बसवराज पाटिल ने ब्रह्माकुमारी संस्था के आध्यात्मिक अनुसंधान सेवा प्रभाग द्वारा आयोजित सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए कहा कि मूल्य व आध्यात्मिक ज्ञान से मनुष्य के चिन्तन, चेतना व संस्कारों का परिष्कार होता है। अध्यात्म पवित्रता, सुख, शान्ति का जनक है, इसलिए वर्तमान में मूल्यों को स्थापित करने में इसकी अति आवश्यकता है।

कोलकाता साइ क्लोट्रॉन सेंटर वैज्ञानिक व सैद्धांतिक भौतिकी अधिकारी डॉ. जजाति केसरी नायक ने कहा कि भारतीय पुरातन संस्कृति की पुनर्स्थापना के लिए परमपिता शिव परमात्मा द्वारा स्थापित ब्रह्माकुमारी संगठन के साथ सभी वर्गों के लोगों को इस महान कर्त्तव्य में शामिल होना चाहिए।

कार्यक्रम का शुभारंभ करते हुए ब्र.कु. प्रभा, ब्र.कु. अम्बिका, बसवराज पाटिल, ब्र.कु. मृत्युंजय, वैज्ञानिक विशाल काशीनाथ, डॉ. बालासाहेब कुलकर्णी तथा अन्य।

अनुसंधान सेवा प्रभाग की अध्यक्षा ब्र.कु. अम्बिका ने कहा कि राजयोग से विचारों का शुद्धिकरण होता है, मन की एकाग्रता बढ़ती है। जीवन में सकारात्मक ऊर्जा का निर्माण होता है। इसलिए राजयोग अपनी जीवनचर्या में शामिल करने से स्थाई सुख, शान्ति की अनुभूति की जा सकती है।

इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस मुम्बई के पूर्व निदेशक डॉ. बालासाहेब कुलकर्णी ने कहा कि अध्यात्म के ज़रिए जिस गति से ब्रह्माकुमारी संस्था ईश्वरीय कर्त्तव्य को विश्व भर में पहुंचाकर आत्माओं की ज्योति जगा रही है, नि:संदेह ही इस धरा पर वैकुण्ठ आने में देरी नहीं लगेगी। हर मानव को इस पुनीत कार्य में भाग लेकर पुण्य अर्जित करना चाहिए।

पुणे खगोल विज्ञान अनुसंधान केन्द्र के वैज्ञानिक विशाल काशीनाथ ने कहा कि आध्यात्मिक ऊर्जा को आचरण में लाने से ही संसार की दिशा व दशा सुधरेगी।

स्वामी विवेकानंद इंस्टीट्यूट ओडिशा के निदेशक डॉ.शक्ति प्रसाद दास ने कहा कि आत्मा और परमात्मा के ज्ञान को स्पष्ट रूप से स्वीकार करने के लिए मन, बुद्धि की स्वच्छता आवश्यक है।

कार्यक्रम में ब्रह्माकुमारी संस्था के कार्यकारी सचिव ब्र.कु.मृत्युंजय, विज्ञान और तकनीकी प्रभाग के राष्ट्रीय संयोजक ब्र.कु.मोहन सिंघल, प्रो.डॉ.शंकर शाह ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

लॉस एंजेलिस। रक्षाबंधन के कार्यक्रम में भाई बहनों को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. ज्योति,दुबई। साथ हैं ब्र.कु. गीता।

पटना-बिहार। प्रसिद्ध फिल्म अभिनेता एवं सांसद शत्रुघ्न सिन्हा को माउण्ट आबू आने का निमंत्रण देने के पश्चात् चित्र में उनके साथ ब्र.कु. संगीता व ब्र.कु. रविंद्र।

मंगोलिया। ब्र.कु. सुधा,मॉस्को के मंगोलिया के उलानबातर आगमन पर उनका मंगोलियन रीति से भव्य स्वागत करते हुए वहाँ के भाई बहनें।

बड़ौत-उ.प्र.। विधायक के.पी. मलिक को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. मोहिनी। साथ हैं डॉ. दिलावर तथा ब्र.कु. प्रवेश।

पोखरा-नेपाल। विश्व हिन्दु महासंघ जिला समिति कास्की द्वारा आयोजित कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए क्षेत्रीय संचालिका राजयोगिनी ब्र.कु. परनीता। साथ हैं नेपाल केशरी डॉ मणिभद्र महाराज तथा अन्य धर्म प्रतिनिधि।

नगर-भरतपुर(राज.)। राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी के स्मृति दिवस पर श्रद्धासुमन अर्पित करते हुए डॉ दिनेश पटेल, भारत गैस के कैप्टन लक्ष्मी नारायण, ब्र.कु.हीरा, ब्र.कु.संध्या तथा अन्य।

यूँ बनायें मधुर सम्बन्ध...

- ब्र.कु. मोनिका,शांतिवन

यदि मनुष्य अपने जीवन में गुण चिन्तन, धैर्य, मैत्रीभाव और संतोष को विशेष रूप से अपनाये तो उसके सम्बन्धों में सरसता, मधुरता रह सकती है।

दोष दर्शन नहीं बल्कि गुण-दर्शन

एक मनुष्य का दूसरे मनुष्य से मनमुटाव प्राय: तभी पैदा होता है जब उसकी दृष्टि दूसरों के अवगुणों पर जाती है। उसमें दोष दर्शन करके वह उत्तेजित हो उठता है और घृणा से अभिभूत हो जाता है। इसके परिणामस्वरूप, उसके मन की प्रसन्नता नष्ट हो जाती है और भावनायें उद्विग्न हो जाती हैं। क्षुब्ध मन्सा वाले ऐसे मनुष्य की बोलचाल कटु, तीक्ष्ण एवं वैर-पूर्ण और व्यवहार स्नेह-रिक्त होता है। अत: सम्बन्धों को दृढ़ करने के लिए आवश्यक है कि हम एक-दूसरे के गुणों को देखें और परस्पर गुणों का ही वर्णन करें।

इस विषय में मनुष्य को यह समझना चाहिए कि वर्तमान समय सभी की तमोप्रधान अवस्था तो है ही, अत: दोष तो सभी में भरे पड़े हैं - किसी में एक दोष है तो अन्य किसी में दूसरा। निर्दोष देवता तो कोई है ही नहीं। अत: जबकि हम यह जानते ही हैं कि आज का हरेक मानव अवगुणों का पुतला है तो बार-बार उनके अवगुणों का चिन्तन एवं बखान का क्या प्रयोजन? सिद्धांत यह है कि मनुष्य जैसा चिन्तन करता है वैसा ही वह स्वयं बन जाता है; तो क्या हमें भी पर-दोषों का चिन्तन करके स्वयं भी वैसा ही बनना है? क्या स्वयं हममें पहले से ही अवगुण कम हैं? दो दिन का जीवन है, क्या इसमें भी स्नेह देने और लेने के बजाय हम घृणा का ही लेन-देन करते हुए प्राण छोड़ना चाहते हैं? दूसरों के अवगुणों रूपी अग्नि से अपने मन को जलाना तो अपनी ही बुद्धिहीनता है। महानता तो इसमें है कि हम दूसरे से भी प्रेम-पूर्ण व्यवहार द्वारा उनके अवगुणों को निकालें।

दूसरी ओर हमें यह समझना चाहिए कि संसार में ऐसा तो कोई एक भी मनुष्य नहीं है जिसमें कोई भी गुण न हो। अत: हमें हरेक व्यक्ति के गुणों की ओर ही दृष्टि डालनी चाहिए क्योंकि गुण-दर्शन से ही मनुष्य के मन में गुण-युक्त संस्कार बनते हैं और प्रसन्नता का उद्रेक होता है तथा जीवन में उल्लास भी बना रहता है।

धैर्य

इसके अतिरिक्त आप देखेंगे कि बहुत बार धैर्य खो बैठने से भी मनुष्य अपने सम्बन्ध बिगाड़ बैठता है। धैर्य के अभाव में वह उट-पटांग बोल देता है और गलत-सलत कदम उठा लेता है कि बाद में पछताने पर भी सुधार होना मुश्किल हो जाता है। यदि मनुष्य धैर्य को बनाये रखे तो वह कभी भावावेश में दूसरे की मान-हानि या तन-हानि करने पर उतारू नहीं होगा। अत: धैर्य एक बहुत ही उच्च मानवीय गुण है जो मानसिक सन्तुलन के लिए अनमोल औषधि है।

मैत्री-भाव

मनुष्य दूसरों का गुण-चिन्तन तभी करता है और उनके प्रति धैर्य-पूर्ण व्यवहार तभी बरतता है जब उनके प्रति उसका मैत्री-भाव बना रहता है। अत: मूल बात तो यह है कि मनुष्य को चाहिए कि दूसरों को अपना भाई मानकर, सभी को एक परमपिता परमात्मा की संतान मानकर, उनसे प्रेम एवं सद्भावना से व्यवहार करे। किसी मनुष्य का यदि कोई भाई बीमार हो, यहाँ तक कि पागल भी हो, तो भी वह उसकी चिकित्सा, सेवा तथा सहायता करता है। इसी प्रकार, यदि मनुष्य अन्य मनुष्यों को भ्रातृवत समझे तो निश्चित ही वह उनसे मैत्री-भाव से व्यवहार करेगा, उनके प्रति सहिष्णुता एवं गुणदृष्टि को भी अपनायेगा।

सन्तोष

प्रकृति के जो पदार्थ हैं, उनके प्रति मनुष्य का यह दृष्टिकोण होना चाहिए कि वह उनके उपार्जन के लिए कोशिश तो पूरी करे परन्तु जो-कुछ भी प्राप्त हो, उससे सन्तुष्ट रहे तथा उसे अपने कर्मों का फल मानकर उन्हीं से गुज़ारा चलाये। तृष्णा सदा मनुष्य के मन में विषमता लाती है, अत: तृष्णा नहीं होनी चाहिए। न्यायोचित, आवश्यकतानुसार एवं सामर्थ्यानुसार पुरूषार्थ ही होना चाहिए। अशान्ति दूर करने के लिए सन्तोष ही सबसे अधिक उपयोगी औषधि है।

ऊपर हमने मनुष्य के सम्बन्धों में विषमता का उल्लेख किया है, वास्तव में उसका मूल कारण सबसे पहले परमात्मा से मानव-मन का सम्बन्ध-विच्छेद है। जब से आत्मा का सम्बन्ध उस परमपिता परमात्मा से टूटा है, तब से ही मनुष्य के अन्य मानवी सम्बन्धों में प्रेम, मैत्री आदि का अभाव हुआ है। अत: मनुष्य में मैत्री-भाव अथवा भ्रातृत्व-भाव तथा उससे पैदा होने वाले सद्गुण -धैर्य, सन्तोष, गुण-चिन्तन आदि स्वत:ही आ जायेंगे यदि वह प्रभु का गुण-चिन्तन करे, उससे नाता फिर से जोड़े। अत: योग ही मानसिक तनाव को दूर कर मानव-मन को शान्ति प्रदान करने का, समाज की समस्याओं को दूर करने का पारस्परिक सम्बन्धों में स्नेह, सहयोग, त्याग और सहिष्णुता लाने का एक मात्र तरीका है जिसे सभी को अपनाना चाहिए क्योंकि 'योग' का अर्थ ही है - मानव का प्रभु से सम्बन्ध जोड़ना तथा मानव का मानव से सहयोग देने की कला को कार्य में लगाना।